International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.155-161

राजस्थान के प्रमुख नगरीय अधिवासों का कार्यात्मक वर्गीकरण

दलवीर सिंह*
प्रो. सरीना कालिया**

सार

नगरों का वर्गीकरण बसाव–स्थिति जनसंख्या के आकार, कार्यात्मक प्रकृति आदि के आधार पर किया जाता है। इस शोध–पत्र में राजस्थान के प्रमुख नगरों के वर्गीकरण का आधार उनमें कार्य की प्रकृति को रखा गया है। जिसके विश्लेषण हेतु नेल्सन की प्रमाप विचलन विधि का प्रयोग किया गया है। इस अनुसार एक ही नगर एक से अधिक कार्यात्मक वर्गों में सम्मिलित हो सकता है। किसी नगरीय क्षेत्र में कृषि, खनन, विनिर्माण, निर्माण, व्यापार, परिवहन, संचार प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक सेवाएँ, प्रशासनिक सेवा, व्यक्तिगत एवं अन्य सेवाओं के कार्यात्मक वर्ग हो सकते हैं। उपर्युक्त वर्गों में राजस्थान के प्रमुख नगरों का विश्लेषणात्मक वर्गीकरण शोधपत्र में प्रस्तुत किया गया है।

शब्दकोश: *नगर, बसाव–स्थिति, नेल्सन की प्रमाप विचलन विधि, कार्यात्मक वर्ग।*

प्रस्तावना

नगरों का वर्गीकरण उनकी विभिन्न विशेषताओं के आधार पर किया जाता है जैसे–बसाव स्थिति, जनसंख्या के आकार, नगर के क्षेत्र, मुख्य कार्य एवं नगर की आयु इत्यादि। इनमें से नगरों के वर्गीकरण का मुख्य व सर्वोत्तम आधार नगर के निवासियों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्य है, क्योंकि नगरों के आन्तरिक पक्ष का सबसे मुख्य तथ्य नगरों का कार्य है। नगर के अनेक भागों में भिन्न–भिन्न कार्य किए जाते हैं। नगर के कार्यों पर बसाव–स्थिति व इसके पृष्ठ–प्रदेश का प्रभाव रहता है। नगर के कार्यों के विश्लेषण से नगर की सामाजिक व आर्थिक स्थिति के अवलोकन एवं नगर के विकास–स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार नगरीय कार्य अन्य तत्वों की अपेक्षा नगरों के वर्गीकरण में महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

नगरों के कार्य अकृषि प्रकृति के होते हैं तथा इनके विशिष्टता के स्तर में भिन्नता देखने को मिलती है। इसके आधार पर नगर नियोजन व प्रादेशिक नियोजन में भी सहायता मिलती है।

साहित्यावलोकन (Literature Review)

भारतीय नगरीय भूगोलवेत्ताओं ने भारतीय नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत करने के लिए अनेक विधियाँ प्रस्तुत की है। सर्वप्रथम वी.ए. जानकी (1954) ने गुणात्मक विधि के आधार पर केरल के नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इसका आधार भौतिक व आर्थिक तत्व थे। अमृतलाल (1959) ने अवस्थिति लब्धि विधि (Location Quotient Method) का प्रयोग भारत के प्रथम श्रेणी नगरों के

---

* शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

कार्यात्मक वर्गीकरण हेतु किया। काशीनाथ सिंह (1959) ने नेल्सन विधि से उत्तर प्रदेश के नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। काजी अहमद (1965) ने 62 तरह के विचर आंकड़ों के आधार पर भारत के 102 नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। वी.एल.एस. प्रकाशराव (1962) ने नगरों के वर्गीकरण करने के लिए अल्पमत वर्ग प्रतिगमन (Least Squre Regression) विधि प्रस्तुत की। अशोक मित्रा (1971, 1973) ने त्रिआधारीय आरेख विधि से भारतीय नगरों को तीन मुख्य वर्गों औद्योगिक, व्यापारिक व परिवहन तथा सेवा नगरों में वर्गीकृत किया।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

इस शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य में अवस्थित 29 मुख्य नगर है। यह राज्य सिंधु घाटी सभ्यता की नगरीय बस्ती कालीबंगा के साथ–साथ जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा व उदयपुर जैसे मध्यकालीन एवं आधुनिक नगर रखता है। इन नगरों के विकास की अवस्था में भिन्न–भिन्न समय काल में इनके कार्यों की प्रकृति भी निरन्तर परिवर्तित होती रही है।

राजस्थान राज्य भारत के उत्तर–पश्चिम में क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़ा एवं जनसंख्या के अनुसार सातवाँ बड़ा प्रदेश है। यह $23^0 3'$ उत्तरी अक्षांश से $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश तथा $69^0 30'$ पूर्वी देशान्तर से $78^0 17'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तर में पंजाब, उत्तर–पूर्व में हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश, दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश एवं दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य स्थित है। इसकी पश्चिमी रेडक्लिफ सीमा पाकिस्तान से लगती है। राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 342231 वर्ग किमी. है तथा कुल जनसंख्या 68548437 (2011) है। इसे प्रशासनिक दृष्टि से 33 जिलों में विभाजित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में अवस्थित 29 मुख्य नगरों को कार्यात्मक वर्गीकरण व नगरों की प्रकृति के अध्ययन हेतु चिह्नित किया गया है। जिसका आधार जनगणना–2011 के व्यावसायिक आंकड़ों की उपलब्धता है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

इस शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है–

- राजस्थान के प्रमुख नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण निर्धारित करना।
- अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख नगरों के कार्यों की विशिष्टता के स्तर का अध्ययन करना।

शोध–प्रविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध–पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। शोध हेतु समंकों का संकलन जनगणना 2011 की श्रमिकों बी–4 एवं बी–6 शृंखला से किया गया है।

यह अध्ययन नेल्सन महोदय की प्रमाप विचलन प्रविधि पर आधारित है। इन्होंने यह प्रविधि भूगोल पत्रिका में 'A Service Classification of American Cities (1955)' नामक शोध–पत्र में प्रस्तुत की थी। इसके अनुसार नगरों के विभिन्न कार्यों की विशिष्टता के स्तर का निर्धारण प्रत्येक कार्य के औसत एवं विचलन के आधार पर किया जाता है। अर्थात् एक नगर एक से अधिक कार्यों में विशिष्टता रख सकता है। विशिष्टता के स्तर का निर्धारण माध्य +1 प्रमाप विचलन, माध्य +2 प्रमाप विचलन तथा माध्य +3 प्रमाप विचलन की श्रेणियों के आधार पर होता है। इस प्रविधि का सूत्र है–

- माध्य (Mean) $= \frac{\Sigma \quad x}{N}$
- प्रमाप विचलन (S.D.) $= \sqrt{\frac{\Sigma \quad (x-M)^2}{N}}$

तालिका 1: राजस्थान के प्रमुख नगरीय अधिवासों का कार्यात्मक वर्गीकरण का प्रतिशत

शहर	कृषि	खनन	विनिर्माण	परिवहन	निर्माण	व्यापार	तकनीकी	व्यावसायिक सेवा	प्रशासन सेवा	व्यक्तिगत एवं अन्य सेवा
गंगानगर	3.80	0.04	12.47	7.06	9.11	24.53	0.97	15.20	14.60	12.21
हनुमानगढ़	12.26	0.04	13.16	8.12	11.44	22.63	0.70	10.82	6.65	14.18
बीकानेर	4.60	0.14	18.92	9.07	15.57	15.26	0.72	11.43	14.42	9.87
चुरू	8.50	0.04	16.43	8.04	24.88	16.69	0.63	10.88	4.27	9.64
सुजानगढ़	10.50	0.13	19.91	5.85	22.05	19.95	0.44	6.96	3.25	10.97
झुंझुनूँ	4.40	0.51	13.49	6.18	29.12	21.59	0.57	12.53	4.59	7.02
भिवाड़ी	13.14	0.75	37.16	4.75	10.49	7.79	0.53	4.49	15.76	5.16
अलवर	5.28	0.13	14.88	7.99	8.64	19.56	1.04	17.00	14.92	10.55
भरतपुर	7.24	0.09	12.44	8.57	11.90	18.37	1.14	14.87	13.42	11.96
धौलपुर	11.68	0.47	14.46	9.89	11.69	16.88	0.56	12.43	9.31	12.62
हिण्डौन	16.08	0.66	16.91	4.93	14.31	22.22	0.50	10.18	4.95	9.26
गंगापुरसिटी	7.84	0.17	13.19	10.62	13.08	20.95	0.74	13.69	5.29	14.43
सवाईमाधोपुर	7.52	0.08	15.59	9.54	14.18	15.64	0.90	13.04	8.95	14.56
जयपुर	3.81	0.11	22.41	6.80	8.71	17.40	1.56	13.76	13.72	11.71
सीकर	5.79	0.07	13.53	5.15	25.93	19.51	0.59	11.73	4.91	12.79
नागौर	12.61	0.10	18.64	6.06	12.22	15.35	0.73	9.89	6.99	17.40
जोधपुर	3.26	1.87	17.26	7.72	11.33	15.73	0.95	11.67	14.38	15.83
पाली	5.58	0.20	37.76	5.63	12.09	15.55	0.49	8.57	5.17	8.96
किशनगढ़	2.44	0.97	34.04	7.09	9.81	20.21	0.41	8.29	5.13	11.63
अजमेर	2.00	0.15	16.42	11.90	12.20	18.45	1.15	15.15	10.30	12.27
ब्यावर	3.02	0.45	30.33	6.49	8.71	20.87	0.73	12.11	4.86	12.44
टोंक	11.84	0.88	33.98	7.92	11.67	11.92	0.35	8.24	5.00	8.20
बूंदी	6.06	0.71	17.91	7.41	8.65	21.84	0.71	14.15	7.86	14.70
भीलवाड़ा	5.67	0.40	29.01	6.30	9.14	18.29	0.92	11.41	7.07	11.79
बांसवाड़ा	5.52	0.10	19.80	7.56	5.61	19.91	0.89	16.36	9.29	14.97
चित्तौड़गढ़	10.04	0.99	22.39	8.99	8.24	17.25	0.95	13.21	8.41	9.53
कोटा	6.17	0.91	14.34	10.34	14.48	17.63	0.83	11.59	10.33	13.38
बारां	12.91	0.70	13.63	7.52	13.38	19.68	0.52	11.07	6.87	13.73
उदयपुर	2.18	0.68	15.55	8.54	5.85	20.96	1.56	17.74	13.41	13.52
औसत	**7.30**	**0.43**	**19.86**	**7.66**	**12.91**	**18.37**	**0.79**	**12.02**	**8.76**	**11.91**
SD	**3.90**	**0.43**	**7.82**	**1.77**	**5.74**	**3.42**	**0.30**	**3.00**	**3.95**	**2.72**
औसत+SD	**11.20**	**0.86**	**27.68**	**9.42**	**18.66**	**21.79**	**1.09**	**15.02**	**12.71**	**14.63**
औसत+2SD	**15.10**	**1.29**	**35.50**	**11.19**	**24.40**	**25.21**	**1.39**	**18.03**	**16.67**	**17.36**
औसत+3SD	**19.00**	**1.71**	**43.32**	**12.96**	**30.14**	**28.63**	**1.70**	**21.03**	**20.62**	**20.08**

विवेचना

प्रस्तुत शोध–पत्र में नेल्सन विधि से अध्ययन क्षेत्र के नगरों को उनकी विशिष्टता के स्तर के आधार पर विभिन्न वर्गों में रखा गया है तथा एक नगर एक से अधिक वर्गों में भी सम्मिलित हो सकता है। इसके लिए कृषि, खनन, विनिर्माण, निर्माण, परिवहन, व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक सेवा, प्रशासनिक सेवाएँ तथा व्यक्तिगत एवं अन्य सेवाएँ के कार्यात्मक वर्गों का माध्य एवं प्रमाप विचलन की गणना की गई है। विशिष्टिकरण

की तीव्रता मापने के लिए तीन श्रेणियाँ (i) माध्य + 1 मानक विचलन (+1SD) (ii) माध्य + 2 मानक विचलन (+2SD) एवं (iii) माध्य + 3 मानक विचलन (+3SD) बनाई गई है। विभिन्न कार्यात्मक वर्गों में विशिष्टीकृत नगरों का विवेचन इस प्रकार है–

- **कृषि नगर (Agriculture Cities)**

अध्ययन क्षेत्र का अधिकांश श्रमिक कृषि क्षेत्र में संलग्न है। कृषि वर्ग में कृषक, कृषि श्रमिक, उद्यानिकी, पशुपालन, वानिकी, मछलीपालन एवं अन्य संबंद्ध आर्थिक क्रियाएँ समाहित हैं।

तालिका 2

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
धौलपुर	11.68	+ 1SD
टोंक	11.84	+1SD
हनुमानगढ़	12.26	+ 1SD
नागौर	12.61	+ 1SD
बारां	12.91	+ 1SD
भिवाड़ी	13.14	+ 1SD
हिण्डौन	16.08	+ 2SD

उपरोक्त तालिका–2 में कुछ नगर हैं, यहाँ कृषि संबंद्ध आर्थिक गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृषि क्षेत्र में औसत रूप से 7.30 प्रतिशत लोग संलग्न है, जो कि तीसरा न्यूनतम है, परन्तु उपरोक्त नगर माध्य +1 प्रमाप विचलन श्रेणी में है, तथा कृषि वर्ग में सर्वाधिक विशिष्टकृत हिण्डौन नगर माध्य +2 प्रमाप विचलन श्रेणी में है। उपरोक्त नगर राज्य के मुख्य कृषि क्षेत्र में अवस्थित होने से नगर में प्रवासित लोग अभी भी कृषि संबद्ध गतिविधियों में लगे हुए हैं।

- **खनन नगर (Mining Cities)**

तालिका 3

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
टोंक	.88	+ 1SD
कोटा	.91	+1SD
किशनगढ़	.97	+ 1SD
चित्तौड़गढ़	.99	+ 1SD
जोधपुर	1.87	+ 3SD

खनन मुख्यतः स्थिति पर निर्भर करता है, क्योंकि स्थानिक प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। खनन की मात्रा एवं उपयोगिता कुशल श्रमिकों एवं तकनीक से प्रभावित होती है। अध्ययन क्षेत्र में कुछ नगर है, यहाँ खनन कार्य में प्रभावी अंश संलग्न है (तालिका 3)। उपरोक्त नगर राज्य के खनन क्षेत्रों में अवस्थित है। टोंक में बजरी, कोटा, चित्तौड़गढ़ एवं जोधपुर में चूना पत्थर एवं बालू पत्थर तथा किशनगढ़ में संगमरमर का खनन किया जाता है। अध्ययन में शामिल 29 शहरों में जोधपुर खनन गतिविधियों में सर्वाधिक विशिष्टीकरण (माध्य +3 प्रमाप विचलन) रखता है।

- **विनिर्माण नगर/औद्योगिक नगर (Manufacturing City)**

तालिका 4

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
भीलवाड़ा	29.01	+ 1SD
ब्यावर	30.33	+1SD
टोंक	33.98	+ 1SD
किशनगढ़	34.04	+ 1SD
भिवाड़ी	37.16	+ 2SD
पाली	37.76	+ 2SD

विनिर्माण कच्चे माल को निर्मित वस्तु या अर्द्धनिर्मित वस्तु में परिवर्तित करने की आर्थिक क्रिया है। विनिर्माण नगरीय क्षेत्रों की आर्थिक संरचना का मुख्य अंग है। प्रतिचयनित नगरों में औसत रूप से सर्वाधिक श्रमिकों का अंश 19.86 विनिर्माण में संलग्न है। भीलवाड़ा, ब्यावर व पाली में सूती वस्त्र उद्योग, किशनगढ़ में स्टोन कटिंग उद्योग, भिवाड़ी में ऑटोमोबाईल उद्योग स्थापित है। चयनित नगरों में से भिवाड़ी (37.16 प्रतिशत) एवं पाली (37.76 प्रतिशत) विनिर्माण में सर्वाधिक विशिष्टीकरण स्तर प्राप्त है।

- **निर्माण नगर (Construction Cities)**

तालिका 5

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
सुजानगढ़	22.05	+ 1SD
चुरू	24.88	+2SD
सीकर	25.43	+ 2SD
झुंझुनूँ	29.12	+ 2SD

निर्माण गतिविधियों में भवन–निर्माण एवं आधारभूत संरचना के विकास की आर्थिक क्रियाएँ सम्मिलित की जाती है। इनमें औसत रूप से 12.91 प्रतिशत रोजगार संलग्न है जो सभी वर्गों में तीसरा सर्वाधिक स्थान रखता है। तालिका–5 को देखने से स्पष्ट होता है कि राजस्थान के निर्माण नगर मुख्यतः शेखावाटी प्रदेश में अवस्थित है, जो वहाँ निर्माण क्रियाओं में तेजी को प्रकट करता है।

- **व्यापार नगर (Trade Cities)**

तालिका 6

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
बूंदी	21.84	+ 1SD
हिण्डौन	22.22	+1SD
हनुमानगढ़	22.63	+ 1SD
गंगानगर	24.53	+ 1SD

व्यापार से तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं के एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को स्थानान्तरण से है। व्यापारिक नगर सर्वाधिक प्रकर्णित स्थल होते हैं, क्योंकि खुदरा व थोक क्रियाओं के केन्द्र होने से अपने पृष्ठ प्रदेश को सेवाएँ प्रदान करते हैं और साथ ही उससे प्रभावित भी होते हैं। उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि राज्य में बूंदी (21.84 प्रतिशत), हिण्डौन (22.22 प्रतिशत), हनुमानगढ़ (22.65 प्रतिशत) व गंगानगर (24.53 प्रतिशत) थोक व खुदरा सेवाओं में सर्वाधिक विशिष्टीकृत स्तर को प्राप्त है, क्योंकि ये नगर राज्य के सर्वाधिक विकसित कृषि क्षेत्रों में अवस्थित है। यहाँ पर कृषि उत्पादों के क्रय विक्रय हेतु कृषि उपज मण्डियाँ अपने विकसित रूप में है। हालांकि व्यापार, क्रियाओं में औसत रूप से चयनित नगरों का 18.37 प्रतिशत संलग्न है, जो दूसरी सर्वोच्च आर्थिक गतिविधि को इंगित करता है।

- **परिवहन नगर (Transportation Cities)**

तालिका 7

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
कोटा	10.34	+ 1SD
गंगापुर सिटी	10.62	+1SD
अजमेर	11.90	+ 2SD

इस वर्ग में नगर के आंतरिक पक्ष को संचालित एवं गतिमान करने वाली आर्थिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं। इसमें नगर की आवश्यक सुविधाएँ जैसे–बिजली, गैस, पेयजल एवं सीवरेज तथा परिवहन एवं संग्रहण की क्रियाएँ समाहित है। इसका प्रतिचयनित नगरों में औसत 7.66 प्रतिशत है। इस वर्ग में सर्वाधिक विशिष्टीकृत अजमेर (11. 90 प्रतिशत) नगर है, क्योंकि राज्य में केन्द्रीय अवस्थिति एवं मुख्य राजमार्गों एवं रेलमार्गों के मिलन स्थल इस नगर में स्थित है। साथ ही यह नगर अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में अवस्थित होने से पूर्वी एवं पश्चिमी राजस्थान हेतु सेतु का कार्य करता है।

- **संचार प्रौद्योगिकी नगर (IT Cities)**

तालिका 8

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
अजमेर	1.15	+ 1SD
भरतपुर	1.14	+1SD
जयपुर	1.56	+ 2SD

इस वर्ग में औसत रूप से 0.79 प्रतिशत व्यक्ति संलग्न है, जो सभी वर्गों में न्यूनतम है। इस वर्ग में राज्य के तीन उपरोक्त नगर विशिष्टीकरण को प्राप्त है। इनमें सर्वाधिक विशिष्टीकृत प्रदेश की राजधानी जयपुर (1.56 प्रतिशत) है, जिसमें प्रदेश के आई.टी. पार्क एवं बी.पी.ओ. सेक्टर के अनेकों कम्पनियों के कार्यालय स्थित हैं।

- **व्यावसायिक या पेशेवर नगर (Professional Cities)**

तालिका 9

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
अजमेर	15.15	+ 1SD
गंगानगर	15.20	+1SD
अलवर	17.00	+ 1SD
उदयपुर	17.74	+ 1SD

इस कार्यात्मक वर्ग में वित्तीय एवं बीमा, रियल इस्टेट तथा निजी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी के साथ–साथ शैक्षणिक , मानव स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्यों से संबंधित क्रियाओं को सम्मिलित किया गया है। जिसमें औसत रूप से 12.02 प्रतिशत व्यक्ति संलग्न है, जो निर्माण क्रियाओं के पश्चात् चौथा स्थान रखता है। इस वर्ग के सर्वाधिक विशिष्टीकृत नगर अजमेर (15.15 प्रतिशत), गंगानगर (15.20 प्रतिशत), अलवर (17.00 प्रतिशत) एवं उदयपुर (17.74 प्रतिशत) है।

- **प्रशासनिक नगर (Administrative Cities)**

तालिका 10

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
उदयपुर	13.41	+ 1SD
भरतपुर	13.42	+1SD
जयपुर	13.72	+ 1SD
जोधपुर	14.38	+ 1SD
बीकानेर	14.42	+ 1SD
गंगानगर	14.60	+ 1SD
अलवर	14.92	+ 1SD
भिवाड़ी	15.76	+ 1SD

प्रतिचयनित 29 नगरों में से सर्वाधिक 8 नगर इस वर्ग में सम्मिलित होते हैं। इस कार्यात्मक वर्ग में प्रशासनिक एवं सम्बद्ध क्रियाएँ, लोक प्रशासन एवं रक्षा सेवाएँ और आवश्यक सामाजिक सुरक्षा सेवाएँ शामिल की गई हैं। इस कार्यात्मक वर्ग में प्रदेश के 5 संभाग स्तरीय मुख्यालय उदयपुर, भरतपुर, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर एवं तीन अन्य नगर गंगानगर, अलवर एवं भिवाड़ी (सर्वोच्च) विशिष्टीकृत स्तर रखते हैं (तालिका 10)।

- **व्यक्तिगत एवं अन्य सेवाओं के नगर (Personal and Other Services Cities)**

तालिका 11

नगर	कार्य (प्रतिशत)	+प्रमाप विचलन
बूंदी	14.70	+ 1SD
बांसवाड़ा	14.97	+1SD
जोधपुर	15.83	+ 1SD
नागौर	17.40	+ 2SD

इस कार्यात्मक वर्ग में हॉटेल सुविधा एवं खाद्य सेवा, कला एवं मनोरंजन तथा पारिवारिक रोजगार संबंधी व्यक्तिगत आर्थिक क्रियाओं को रखा गया है। इस वर्ग प्रतिचयनित नगरों का औसत रूप से 11.91 प्रतिशत व्यक्ति संलग्न है तथा इस वर्ग का सर्वाधिक विशिष्टीकृ नगर नागौर (17.40 प्रतिशत) है (तालिका 11 देखें)। इस कार्यात्मक वर्ग की क्रियाएँ सामान्यतः विस्तृत रूप से प्रकर्णित हैं और औसत से 2.72 का विचलन प्रदर्शित करती है।

- **विविधात्मक नगर (Diversify City)**

यदि किसी नगर ने 10 कार्यात्मक वर्गों के किसी भी एक वर्ग में माध्य +1 प्रमाप विचलन के विशिष्टीकरण स्तर को प्राप्त नहीं किया है। उस नगर को विविधात्मक नगर के वर्ग में रखा जाता है। इस कार्यात्मक वर्ग में 29 प्रतिचयनित नगरों में एकमात्र नगर सवाईमाधोपुर है। क्योंकि इस नगर में सभी कार्यात्मक वर्गों में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशत औसत से न्यूनतम विचलन रखता है।

निष्कर्ष

नेल्सन विधि से अध्ययन करने से स्पष्ट है कि एक नगर एक से अधिक कार्यात्मक वर्गों में विशिष्टीकरण स्तर को प्राप्त कर सकता है जैसे टोंक, कोटा, भिवाड़ी, अजमेर, हनुमानगढ़, गंगानगर, अलवर, जयपुर, उदयपुर भरतपुर, किशनगढ़, बूंदी, जोधपुर, नागौर हिण्डौन। वहीं धौलपुर, पाली, गंगापुर सिटी, बारां, ब्यावर, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, सुजानगढ़, चुरू, झुंझुनूँ, सीकर, बीकानेर तथा चित्तौड़गढ़ एक ही कार्यात्मक वर्ग में विशिष्टीकरण स्तर को प्राप्त कर सके है। सवाई माधोपुर किसी भी कार्यातमक वर्ग में विशिष्टीकरण को प्राप्त न करने वाला एकमात्र नगर है अर्थात् सवाई माधोपुर विविधात्मक नगर की श्रेणी में है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dickinson, R.E.; City, Region & Regisnalism, London 1955.
2. Nelson, H.J. (1955); 'A service classification of American Cities, Geography, Vol.31, pp. 195.
3. Janki, V.A.; 'Functional Classification of urban Settlement in Kerla', Journal of Maharaja Saya ji Rao University of Baroda, Vol. III, October 1954, 81.90.
4. Amirtlal, 'Some Aspects of Functional Classification of Cities and a proposed Scheme of Clarifying Indian Cities, N.G.J.L., Vol.V, pt1, March1959, 12-20.
5. Singh, K.N.; Functional & Functional Classification of Roms in V.P., NGJI, Vo.-V, Pt III, September 1959, 121-48.
6. Rao, Prakash V.L.S.; Presidential Address, Council of Indian Geographers, Cuttack (1962)

❖◆❖